

सूकर पालन में आहार प्रबंधन की रणनीतियाँ: चरणबद्ध आहार, लिंग-आधारित आहार एवं व्यक्तिगत आहार पशुधन उत्पादन तथा प्रबंधन विभाग



कविता खोसला चैटली¹, धीरेंद्र भोंसले¹, रंजना सिन्हा², निष्ठा सिंह¹, रूपल पाठक¹

¹पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

²बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

*अनुरूपी लेखक

कविता खोसला चैटली¹

सूकर पालन (पिग फार्मिंग) भारतीय कृषि का एक महत्वपूर्ण अंग है जो ग्रामीण किसानों की आजीविका में अहम भूमिका निभाता है। सूकर पालन में होने वाले कुल खर्च का लगभग दो-तिहाई हिस्सा केवल आहार पर खर्च होता है, इसलिए आहार प्रबंधन लाभदायक सूकर पालन की आधारशिला है। उचित आहार प्रबंधन से न केवल उत्पादन बढ़ता है बल्कि मृत्यु दर कम होती है और किसान की आय में वृद्धि होती है।

गर्भवस्था में आहार प्रबंधन

गर्भवती सूकरियों एवं युवा मादाओं (गिल्ट्स) के आहार को तीन चरणों में बाँटा जाता है:

- चरण I (0-35 दिन): भ्रूण मृत्यु को रोकने के लिए 2-2.5 किग्रा/दिन आहार सीमित रखें।

- चरण II (36-70 दिन): संतुलित पोषण सुनिश्चित करें जिससे स्वस्थ भ्रूण विकसित हो।

- चरण III (71-109 दिन): दूध उत्पादन के लिए प्रोटीन, विटामिन एवं खनिज पदार्थों की मात्रा बढ़ाएँ। प्रसव से पहले सूकरी को गेहूँ की भूसी / चावल की भूसी (1:1 अनुपात) मिश्रित आहार दें और हमेशा स्वच्छ व गुणगुना पानी उपलब्ध रखें।

चरणबद्ध आहार (Phase Feeding)

वृद्धि एवं विकास की आवश्यकता के अनुसार आहार को अलग-अलग चरणों में विभाजित करने से पोषक तत्वों की बर्बादी कम होती है और नाइट्रोजन तथा फॉस्फोरस का उत्सर्जन 5-10% तक घटाया जा सकता है। प्रमुख चरण इस प्रकार हैं:

- प्री-स्टार्टर (7-21 दिन): माँ के दूध से ठोस आहार पर जाने का संक्रमण काल। कच्चा प्रोटीन: 24%
- क्रीप फीडिंग (21-35 दिन): माँ के साथ बच्चों को अलग बाड़े में विशेष पोषण। कच्चा प्रोटीन: 25-30%
- ग्राउंडर चरण (2-5 माह): सामान्य वृद्धि के लिए संतुलित आहार। कच्चा प्रोटीन: 14%

- फिनिशर चरण (5-8 माह): बाज़ार के लिए तैयारी। कच्चा प्रोटीन: 12%

लिंग-आधारित आहार (Split-Sex Feeding)

मादा (गिल्ट) और नर (बैरो) की पोषण आवश्यकताएँ अलग होती हैं। मादाओं को अधिक प्रोटीन एवं अमीनो एसिड की ज़रूरत होती है जबकि नरों को कम। दोनों को अलग-अलग बाड़ों में रखकर उनकी ज़रूरत के अनुसार आहार देने से:

- नाइट्रोजन उत्सर्जन 5-10% तक कम होता है।
- आहार दक्षता बढ़ती है एवं उत्पादन लागत घटती है।
- मादाओं की वृद्धि एवं प्रदर्शन क्षमता से समझौता किए बिना नरों को किफ़ायती आहार मिलता है।

व्यक्तिगत आहार (Individual Feeding)

नर सूकर (बोअर): प्रत्येक 100 किग्रा शरीर भार पर 2-2.5 किग्रा सांद्र आहार दें। आहार ऐसा हो कि जानवर न बहुत मोटा हो और न कमज़ोर। यदि जानवर घर के अंदर हो तो हरा चारा अवश्य दें।

दूध पिलाने वाली सूकरी: प्रति 100 किग्रा शरीर भार पर 2.5-3 किग्रा + प्रत्येक बच्चे के लिए 0.2 किग्रा अतिरिक्त। उदाहरण: 100 किग्रा की सूकरी जिसके साथ 8 बच्चे हों, उसे 4.6 किग्रा प्रतिदिन आहार दें।

अनाथ बच्चों की देखभाल (Orphan Piglets)

यदि सूकरी मर जाए या दूध न दे सके, तो बच्चों को शीघ्र ही दूसरी दूधारू सूकरी को सौंपें। गाय का दूध सूकरी के दूध का सबसे अच्छा विकल्प है। प्रत्येक बच्चे को 300-500 मिली दूध प्रतिदिन चाहिए। पहले कुछ हफ्तों में 5-6 बार, फिर धीरे-धीरे 2-3 बार दूध

पिलाएँ। साथ ही आयरन इंजेक्शन (इमफेरॉन) अवश्य दें।

निष्कर्ष

सूकर पालन में लाभ तभी सुनिश्चित होता है जब उचित आहार प्रबंधन अपनाया जाए। चरणबद्ध आहार से पोषक तत्वों की बर्बादी कम होती है, लिंग-आधारित आहार से उत्पादन दक्षता बढ़ती है और व्यक्तिगत आहार से प्रत्येक पशु को उसकी ज़रूरत के अनुसार पोषण मिलता है। इन तीनों रणनीतियों को अपनाकर किसान सूकर पालन को अधिक लाभदायक और टिकाऊ बना सकते हैं।